IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.53

Volume 4, Issue 4, March 2024

21oha lnh esa HkweaMyhdj.k vkSj xka/khoknh n'kZu

डॉ. राणा प्रताप सिंह

(प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग)

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय,

माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाडा (सिरोही) राजस्थान

शोध पत्र सारांश

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जब समाज को संस्कृति और धर्म बांटने का काम कर रहे हैं तो अर्थव्यवस्था, सूचना प्रोधोगिकी एवं बाजार सम्भावनाएँ विश्व को एक गांव में तब्दील कर रही है, अहस्तक्षेपवाद वैश्वीकरण का पर्याय हैं और वैश्वीकरण की प्रक्रिया आज से नहीं अपितु अतीत से संचालित है। सिंधु सभ्यता, दजला–फरात, मिस्र, यूनान एवं रोमनकाल से जारी है, लेकिन अब वैश्वीकरण के स्वरुप में जरुर परिवर्तन आया है। आज खुला बाजार खुली संस्कृति सबल को और बलिष्ठ बना रही है व कमजोर को अति कमजोर। इस परिदृश्य में गांधीवादी अर्थशास्त्र के बुनियादी तत्व जैसे मानव संसाधन का समुचित उपयोग, सत्ता एवं सम्पत्ति का विकेन्द्रीकरण तथा समता का भाव आदि की महता बढ़ जाती है, इनके द्वारा ही विश्व का संतुलित समग्र विकास सम्भव हो सकता है।

गांधीजी ने पूंजी और बाजार की बजाय मानव के सामाजिक विकास को प्राथमिकता दी, उनके अनुसार लोगों को बेकाम रखना सबसे बड़ी सामाजिक बुराई है। उन्होनें कहा कि जो राष्ट्र अपने प्रत्येक नागरिक के हाथ में हुनर नहीं दे सकता वह कभी आत्मनिर्भर नहीं बन सकता। उन्होनें कहा कि हर हाथ को काम मिले, यह प्रत्येक राष्ट्र का प्राथमिक दायित्व है। इस कथन से प्रेरित वर्तमान सरकार रोजगार गारण्टी योजना को संचालित कर रही है। वास्तव में लोगों को बेकाम रखना सबसे बड़ी सामाजिक बुराई है। इस प्रकार गांधी किसी राष्ट्र की बाहरी चकाचौंध तथा भौतिक विकास में विष्वास नहीं रखते, अपितु उत्पादन एवं संसाधन के न्यायोचित वितरण में विष्वास रखते थे जो आज के युग की परमावष्यकता है, इसकी पूर्ति उदारीकरण द्वारा कदापि नहीं हो सकती क्योंकि एक तरफ ये गरीब और अमीर के बीच में खाई को बढ़ावा देती है, दूसरी तरफ पूंजी व उत्पादन को निजीकरण द्वारा केंद्रित तो करती हैं साथ ही रोजगार विहीन ढ़ांचे के निर्माण में भरसक सहायता प्रदान करती है, ऐसी विकट परिस्थितियों में एकमात्र गांधीदर्षन ही विष्व अर्थषास्त्र का पथप्रदर्षक बन सकता है यही इस पत्र का उद्देष्य है।

'kks/k i=

भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने प्राचीन काल में ही विश्व में अपनी अलग पहचान बनाये रखी है। यहां के मनिषियों, तपस्वियों, दार्शनिकों ने अपना प्रभुत्व हमेशा बनाये रखा है। 20वीं शताब्दी में महात्मा गांधी ने अपने कार्य, विचारों व दर्शन से समस्त विश्व को प्रभावित किया। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन व आजादी में उनका योगदान चिरस्मरणीय है। आजादी के बाद ऐसा प्रतीत हुआ कि हम सम्भवतया गांधी के सपनों के भारत का निर्माण कर, प्रगति के पथ पर अग्रसर होंगे। हम आजादी के 77 वर्ष पूरे कर चुके है लेकिन आज हमारा राष्ट्र एक ऐसे दौराये पर खड़ा है जहां भ्रष्टाचार, आतंकवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकतावाद, नस्लवाद, जातिग्रसित है। ऐसे संकट के समय में हम ये सोचे कि गांधी के विचारों व आदर्शो का कितना प्रतिशत आज हम अपनाये हुए है। कुछ समय पहले प्रदर्शित एक फिल्म ''मुन्ना भाई'' ने गांधी को एक नई पहचान दी। भारत में

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, March 2024

गांधीवाद के स्थान पर ''गांधीगिरी'' का बोल बाला हो गया और लोग अपनी बात गांधीगिरी से कहने लगे। गांधी जी द्वारा बताये गए अहिंसा और सत्याग्रह (सत्य के साथ आग्रह) के विचारों का लोगों पर असर हुआ है।

जब हम इतना सोचते है तो एक बात आइन्स्टाइन की याद आती है जिसमें उन्होंने कहा था '' आने वाली पीढियाँ मुश्किल से विश्वास कर सकेगी कि इस प्रकार का व्यक्ति कभी मांस व रक्त के साथ पृथ्वी पर अवतरित भी हुआ था।'' गौतम बुद्व के बाद मानव इतिहास में करूणा सा दूसरा प्रतीक देखने को नही मिलता मार्टिन लूथर जिम कूरियर के शब्दों में ''गांधी अनिवार्य है, यदि मानवता को विकसित होना है तो गांधी आवश्यक है। यदि मानव का एवं उसके उत्कृष्ट मूल्यों की सार्थकता है तो गांधी की सार्थकता है। यदि राम,कृष्ण और सुकरात की सार्थकता है तो गांधी की भी सार्थकता है।''

गांधी ने अहिंसा, ब्रहमचर्य, ग्राम स्वराज्य तथा राज्य के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किया है, उसे सिद्धान्त की कसौटी पर सहज ढ़ग से जाँचा–परखा जा सकता है तथा उसके आधार पर एक व्यवस्था निर्मित हो सकती है गांधी जी का का विचार था कि स्थाई शांति के लिए समाज में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विषमता को समाप्त किया जाना चाहिए। अमीरों व गरीबों के बीच की खाई को समाप्त किया जाना चाहिए।

इसमें संदेह भी नहीं कि गांधी जी ने विकास का जो मार्ग दिखाया, वह भारतीय संस्कृति और मूल्य परम्परा के अनुरूप था, परन्तु देश को प्रोद्योगिकी प्रधान और तनाव भरे विश्व में अपना उपयुक्त स्थान प्राप्त करने के लिए इससे भिन्न रास्ता चुनना पड़ा।

खैर आज, गांधी हमारी आवश्यकता है या फैशन, यह फर्क कठिन हो रहा है। उनके विचार व दर्शन वास्तविक रूप से अपनाये जा रहे है या वो बाजार में एक प्रचलित ब्रान्ड के रूप में हमारे सामने है यह कहना भी कठिन हो रहा है। दुर्भाग्य से भारतीय धरा के इस सपूत के चिंतन आचरण और दर्शन को जहाँ समूची दुनिया के लिए मार्गदर्शक बनाया जा रहा है वहीं इस देश में गांधी को एक व्यक्ति के रूप में ठुकरा दिया गया। गांधी जी 20वीं शताब्दी के चमत्कार भी है, सत्य भी है और आलोचना के लिए सहज उपलब्ध सुविधा भी। हमने अभी तक गांधी की बुद्धि की मीमांसा ही की है, अब कर्म की मीमांसा करने का सही समय है। आज की राजनीति में निस्वार्थ लोक सेवा और नैतिकता का कोई महत्व नही रहा । गांधी का नाम सभी लेते है लेकिन कर्त्तव्य में सभी शून्य है। आज की स्थिति में भारत में अनेक समस्याएं है और वह बढ़ती ही जा रही है इनको छुड़ाने का केवल सोंग रचा जा रहा है।

आज हम विश्लेषण करें कि इस सीमित विश्व में जो विकास हुआ है उसके परिणाम स्वरूप सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं नैतिक मूल्यों में हुआ अवमूल्यन का समाधान गांधीवाद के द्वारा संभव है ? क्या अग्रेंजी शासन को उखाड़ फैंकने वाले गांधी के सिद्धान्त सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, स्वदेशी, सर्वधर्म सम्भाव अस्पृश्यता आदि का जन मानस पर कितन प्रभाव है ? क्या आज गांधीवाद एक लुप्त प्राय बनावटी कपोल कल्पना मात्र रह गया है ? क्या गांधीवाद की पुर्नस्थाना सम्भव है ? और क्या आज भी इसकी प्राणदायनी शक्ति, हमारा सम्बल बना सकती है लेकिन ये सब आज के समाज में सम्भव प्रतीत नही होता।

महात्मा गांधी निर्विवाद रूप से गत सदी के महानतम शिखर पुरूष थे, क्योंकि उन्होने मशीन के स्थान पर मनुष्य और सूट के स्थान पर सूत को महत्व दिया। गांधीजी मानवीय समस्याओं के सन्दर्भ में ऐसा समग्र दृष्टिकोण अपनाते थे जिससे व्यक्तिगत, स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर मानव अस्तित्व के लगभग सभी प्रमुख स्तरों पर सुधार और परीवर्तन हो सकें। मानव की प्राचीन संस्कृति–ग्रामीण संस्कृति है जिसमें उसकी बर्बर अवस्था से लेकर स्थायित्व प्राप्त करने तक की विकास यात्रा की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। भारत की प्राचीन संस्कृति का आधार ग्राम ही है। वर्तमान समय में अनेक सांस्कृतिक परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनो तथा विकास के अध्ययन के लिये ग्रामीण समुदाय का व्यवस्थित अध्ययन आवष्यक है क्योंकि ग्रामीण समुदाय की संरचना में होने वाला परिवर्तन सम्पूर्ण देष को प्रभावित करता है। महात्मा गाँधी का कथन है कि ''भारत

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, March 2024

गाँवों का देष है। यहाँ की आत्मा गाँवों में निवास करती है।'' इनका यह कथन इस बात पर बल देता है कि गाँवों के विकास के बिना हम विकास कर ही नहीं सकते तथा भारत ग्रामीण अंचलो का विकास किये बिना विष्व आर्थिक विकास की दौड़ में अग्रणी नहीं हो सकता। गांधी जी के अनुसार भारत का विकास गांवो के विकास पर निर्भर है। इस संदर्भ में गांधी ने ग्राम–स्वराज्य (ग्राम गणराज्य) की अवधारणा प्रस्तुत की। उनकी योजना में सता का सर्वाधिक प्रमुख केन्द्र गाँव था। वे विकेन्द्रित व्यवस्था के लिये सता का प्रवाह नीचे से ऊपर की तरफ आवष्यक मानते थे। उनका मत था की देष की उन्नति हेतु यह आवष्यक है कि गाँव शासन की दृष्टि से स्वषासी एवं स्वावलम्बी इकाई बनें।

आज इक्कसवीं सदी के आते ही एक बार तो ऐसा लगता है कि गांधीवाद सचमुच खत्म हो चुका है लेकिन इन दिनों वैश्वीकरण, उदारीकरण, आर्थिक मन्दी, बाजार व्यवस्था इत्यादि नामों का जो शोर मचा हुआ है उसे देखते हुऐ गांधीजी के द्वारा व्यक्त होने वाले राष्ट्र निर्माण एवम् विकास के स्वपनों को याद कर लेना आवश्यक है ताकि इससे आर्थिक सुधारों के बीच विकास की दिशा को समझने मे मदद मिल सकें।

भूमण्डलीकरण अर्थात भौतिकता की चकाचौंध और दुनिया की अंधी दौड़ में आध्यात्मिक और सामाजिक मूल्य तो गौण हो गये तथा व्यक्ति विकास एवं आर्थिक मूल्य प्रधान हो गए, ऐसे दौर में गांधी के विचारों की सार्थकता पर प्रष्न उठाना बड़ी विडम्बना है क्योंकि विकास की अवधारणा का अर्थ केवल मात्र पष्चिमी पूंजीवादी मॉडल पर आधारित आर्थिक विकास नहीं है लेकिन वर्तमान विष्व में जब समाजवादी सोवियत रुस के विघटन को देखा तो पूंजीवादियों ने इस अवधारणा पर और अधिक बल देते हुए बताया कि वैष्विक विकास का एकमात्र मार्ग पूंजीवाद ही है, जिसके प्रमुख आधार हैंः– औधोगिकीकरण, मषीनीकरण, शहरीकरण आदि–आदि। इस परिप्रेक्ष्य में गांधीजी की सोच हमें अनुकूल प्रतीत नहीं होती लेकिन सत्यता यह है कि बापू औधोगिकीकरण और शहरीकरण के अन्धानुकरण के विरोधी थे। उन्होनें मानव के लिए मषीनों को दानव बताया तथा इस तत्थ्य को इंगित किया कि प्रत्येक मनुष्य के हाथ में काम हो, तभी समाज का संतुलित विकास हो सकता है। जब तक सामूहिक विकास नहीं होगा तब तक विष्व का आधार कमजोर होगा। उन्होनें नव उपनिवेषवादी संस्कृति को आंधी बताया जिसका मुकाबला सामूहिकता से ही किया जा सकता है।

गांधीजी ने यह समझाया कि सदी बदलने के साथ हमारा देष और दुनिया पलक झपकते ही नाटकीय ढंग से नहीं बदलती। इस बार यह जरुरी हुआ कि सदी के साथ–साथ सहस्त्राब्दी भी बदली और इस बदलाव का शोर कुछ ज्यादा ही मचाया गया पर इन्सानों की जरुरतें और राष्ट्रहित कैलेण्डर के पन्नों के साथ नहीं बदलते। इन्हें प्रभावित करती हैं इतिहास की धारा जिसको शक्ति देते हैं सामाजिक उथल–पुथल और आर्थिक तकनीकी घटनाक्रम–आविष्कार और शक्ति संघर्ष के अनुसार बड़ी शक्तियों का उत्थान–पतन। इस बार भी ऐसा हो रहा है।

भूमण्डलीकरण नाम की प्रक्रिया 1990 के दषक में प्रकट होने वाला कोई अजूबा नहीं– इसके पहले उपनिवेषवाद के युग में बडे–बड़े साम्राज्यवादी देष पूरे विष्व को अपने साँचे में ढ़ालने का प्रयत्न कर रहे हैं '' सफेद आदमी का बोझ'' (व्हाईट मैन बडन) एक ऐसा अहंकारी मुहावरा था जिसका इस्तेमाल किया जाता था, असभ्य और बर्बर समझे जाने वाले जानवर सरीखे गुलामों को सुसंस्कृत बनाने के लक्ष्य को लुभावना दर्षाने के लिए। हकीकत यह है कि ब्रिटेन हो या फ्रांस, पुर्तगाल हो या हॉलैण्ड, उपनिवेषों की सम्पत्ति के निमर्म दोहन और वहां के निवासियों के खूंखार शोषण, उत्पीड़न का चेहरा मानवीय बनाने के लिए ही इस सांस्कृतिक मिषन का ढिंढोरा रुडयार्ड किपलिंग जैसे दरबारी कवि पत्रकार पीटते रहते थे जिसे उस औपनिवेषिक दौर में अंतनिर्भरता या परस्पर सहकार का जामा पहनाने की कोषिष की जाती थी उसे एक खास किस्म का भूमण्डलीकरण ही कहा जाना चाहिए। कुछ समय पहले बॉल्षेविक और फिर चीनी क्रांति के बाद विष्व स्तर पर अपने विचारधारा के प्रचार और राजनीतिक, आर्थिक प्रणाली के बीजारोपण के माध्यम से समाजवादी खेमें में एक विकल्प सामने रखा

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, March 2024

अतः तर्कसंगत बात यही है कि भूमण्डलीकरण की उत्पीड़क चुनौतियाँ तब भी मुंह बाये खड़ी थी जब गांधीजी अपने देषवासियों का मार्गदर्षन आजादी की लड़ाई के लिए कर रहे थे जहां तक विकास की अवधारणा का प्रष्न है तो गांधीजी की सोच सुलझी हुई तथा स्पष्ट थी। उन्होनें साफ कहा था ''स्वराज्य'' का अर्थ सिर्फ राजनीतिक आजादी ही नहीं अपितु जब तक हर इन्सान भूख और निरक्षरता की गुलामी से निजात नहीं पाता अपने बहुमुखी विकास के लिए सभी तरह के शोषक बंधकों से मुक्त नहीं होता हमारी आजादी अधूरी ही समझनी चाहिए। इसके साथ ही उन्होनें समाज के दुर्बल उपेक्षित और आम तौर पर अनदेखा किये जाने वाले तबकों को सबसे पहले विकास का लाभ पहुंचाने की प्राथमिकता दी थी। उनका एक प्रसिद्ध कथन है जिसे उन्होनें अपने देषवासियों को एक तिलिस्म के रुप में सौंपा था– जब भी कोई असमंजस हो, उस दरिद्रतम व्यक्ति का चेहरा याद करो जिसे तुमने देखा है और फिर सोचो कि जो फैसला तुम लेने जा रहे हो उसका क्या असर उस पर पड़ेगा। गांधी के लिए यही सबसे बड़ी और सच्ची कसौटी है। विकास के लिए किये जाने वाले फैसलों की।

पूर्ण स्वराज्य जब तक गांधी के रामराज्य में नहीं बदल सकता जब तक उन्हीं शब्दों में हर आंख से हर आंसू पौंछ नहीं दिया जाता लेकिन आज भी इस कथन पर सक्रियतापूर्वक विचार नहीं किया जा रहा है जिस कारण एक अरब से अधिक आबादी वाले देष की बहुत बड़ी जनसंख्या गरीबी के नीचे बसर कर रही है और नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सैन जैसे लोग हमारा ध्यान इस ओर दिला चुके हैं कि हक और हिस्सा आज भी हर नागरिक को न्यायसंगत तरीके से नहीं मिल रहा है। दलित, आदिवासी, महिलाएँ, ग्रामीण और शहरी निर्धन विकास के लाभ से अक्सर तथा अधिकतर वंचित ही रहे हैं उनके लिए वे सारे आंकड़े पेट भरने, तन ढंकने या फिर सिर छुपाने के साधन नहीं जुटा सकते जो प्रमाणित करते हैं कि भारत ने आजादी के वर्षों में कितनी तरक्की कर ली है।

भूमण्डलीकरण के इस दौर में आर्थिक सुधारों को मानवीय चेहरा पहनाने की जरुरत आज सब मानते हैं लेकिन हमारी समझ में गांधी का सन्देष सिर्फ क्रूर, डरावने चेहरे पर खुषगवार मुखौटा पहनाने का नहीं बल्कि सरकारों के विकास के हर फैसले को दरिद्र नारायण की कसौटी पर कसने का है। इस संदर्भ में गांधीजी की सार्थकता घटी नहीं बेहद बढ़ गई है।

21वीं सदी में भूमण्डलीकरण के इस दौर में गांधीवाद नवयुवकों को प्रेरणा देने के लिए गांधीगिरी के रुप में आया। वास्तव में आज भारत में ही नहीं अपितु विष्व के अन्य देषों में जो गरीबी और अमीरी के बीच खाई बढ़ती जा रही है उससे वैष्विक विकास असंतुलित हुआ है। आज तीसरी दुनिया के देष भूखमरी, गरीबी और अषिक्षा से ग्रसित है जिससे वहाँ के नवयुवक किताब की जगह हथियार उठाकर आतंकवाद की राह पकड़ रहे हैं जिससे न केवल विष्व समुदाय अस्थिर हुआ है वरन् एक ऐसे संक्रमण का दौर शुरु हुआ है जिसको दिग्भ्रमण काल की संज्ञा दे सकते हैं एवं इसको दिषा देने का कार्य केवल गांधीदर्षन ही कर सकता है। अतः गांधी की भूमिका अतीत, वर्तमान एवं भविष्य में भी महत्वपूर्ण रहेगी।

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि गांधी ने अहिंसा के ब्रम्हास्त्र से भारत को आजादी दिलाने का पथ प्रषस्त किया तो आज भूमण्डलीकरण के दौर में गांधीजी के विचार ही चिराग का काम कर सकते हैं क्योंकि आज जरुरत आर्थिक विकास की नहीं अपितु समग्र संतुलित, सामुदायिक, सामाजिक विकास की है जिसकी प्राप्ति गांधीजी के विचारों के अनुकरण से ही हो सकती है। इससे सिद्ध होता है कि भूमण्डलीकरण की इस सदी में गांधी के विचारों की भूमिका प्रमुख हो गई है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, March 2024

InHk xUFk&

1. सलेक्टेट वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी
2. रोजगार समाचार 1–7 अक्टूबर 2005
3. यंग इण्डिया– 26 नवम्बर 1931
4. हरिजन– 16 दिसम्बर 1937
5. जी.बी. कृपलानी, ''महात्मा गाँधी :– जीव और चितंन'', प्रकाषन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1978
6. आचार्य राममूर्ति, ''षिक्षा, संस्कृति और समाज'', श्रम भारती, खादी ग्राम मुंगेर, बिहार, 1990
7. महात्मा गाँधी, ''हिंद स्वराज्य'', (अनुवाद) अमृतलाल ठाकुरदास, नानावटी, सर्व सेवा संघ प्रकाषन, वाराणासी, 1989